दिल का हर रास्ता

तुम तक

केशव सोनेवाने

''तुम तक''

Publishing-in-support-of,

FSP Media Publications

RZ 94, Sector - 6, Dwarka, New Delhi - 110075
Shubham Vihar, Mangla, Bilaspur, Chhattisgarh - 495001

Website: *www.fspmedia.in*

© Copyright, Author

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

ISBN: 978-81-19927-60-9

Price: ₹ 200.00

The opinions/ contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/ standings/ thoughts of Publisher

Printed in India

‘‘तुम तक’’

वैभव सोनेवाने

!! ऊँ गणेशा नमः !!

!! ऊँ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः!!

"मैं यह किताब अपने गुरूदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली के चरणों में अर्पण करता हूँ।"

लेखक के बारे में

वैभव जी मुम्बई यूनिवर्सिटी से इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूरी कर रहे हैं। इनका जन्म १४ अक्टुबर १९९५ को गोंदिया (नागपुर), महाराष्ट्र में हुआ था। मातृभाषा हिन्दी होने के कारण हमेंशा से ही हिन्दी साहित्य में इनकी रूची रही। साथ ही संगीत एवं कविताओं के लिये आकर्षण इनका प्रेरणा स्त्रोत रहा।

पुस्तक के बारे में

''तुम तक'' एक अनुपम कविताओं का संकलन है, जिसमें प्रेम संबंध के बेहतर लम्हों को शब्दों के सहारे बड़ी ही खूबसूरती से पन्नों पर उतारा गया है। पहली ही किताब में इन बेजोड़ कविताओं द्वारा लेखक ने अपनी प्रतिभा का प्रमाण दिया है।

आभार

इस किताब को चुनने के लिऐ मैं पाठकों का आभार व्यक्त करता हूँ। मुझे आशा है कि, यह कविताओं की श्रृंखला आपको पसंद आएगी और लम्बे समय तक आपके हृदय से जुड़ी रहेगी।

अगर आपका स्नेह ऐसा ही मिलता रहा, तो भविष्य में भी ऐसे ही हृदय स्पर्श करने वाली कविताओं से आपको आनन्द-मग्न करता रहूँगा।

धन्यवाद

कविता के संदर्भ में, दो शब्द

कभी नींद में, कभी बैठे हुए,
कुछ विचारों को मन में समेटे हुए,
जी रहे थे आसमान के तले जमीं पे,
आज मन किया उन शब्दों को,
अंकित कर दूँ कहीं पे॥

ये किताब कागज की रचना नहीं,
भावनाओं का नया रूप है!
जो हृदय ज्योति से प्रगट हो,
वैसी सुनहरी धूप है॥

यह महज़ अक्षरों का संसार नहीं,
मेरे मन का तेरे हृदय में संचार है!
ये केवल कवितायें नहीं,
प्यार-प्यार और प्यार है॥

- वैभव

तेरे होंठ हो, मेरे शब्द हो

तेरे होंठ हो, मेरे शब्द हो,
और अनकहीं सी बात हो!
एहसास तेरा जो दे मुझे,
ऐसी कभी बरसात हो।।

मैं छोड़ता जग जा रहा,
फिर भी मगर सब पा रहा!
तेरी रूह मुझे हैं मिल गई,
अब काया में क्या बचा रहा।।

महसूस कर न सके कोई,
वैसे अनगिनत जज़्बात हो!
तेरे होंठ हो मेरे शब्द हो,
और अनकहीं सी बात हो।।

दिल था कहाँ इस अंग में,
चल पड़ा था तेरे संग में,
माटी सा बन गया हूँ मैं,
जो ढाल रहा तेरे ढंग में।

नज़रे मिले और दिल खिले,
ऐसा कभी एक साथ हो!
तेरे होंठ हो मेरे शब्द हो,
और अनकही सी बात हो!
एहसास तेरा जो दे मुझे,
ऐसी कभी बरसात हो।।

- वैभव

एक आसमान ही खाली बचा था

ख़्वाब भी तेरे ख़्याल भी तेरे,
नैना जो देखे वो नज़ारे भी तेरे!
बातें ना समझे मेरी पर,
समझे इशारे भी तेरे,
क्या इशारों ने तेरे दिया मुझको सीखा?
एक आसमान ही खाली बचा था,
उसमें भी नाम अब तेरा लिखा॥

बारिश की हैं बूँदें या तेरी मुस्कुराहट,
छू रही हैं हवाएँ या तेरी आहट॥

कैसा ये प्यार कैसी ये चाहत,
की मुझमें नहीं कुछ मेरा बचा!
एक आसमान ही खाली बचा था,
उसमें भी नाम अब तेरा लिखा॥

- वैभव

दिल का हर रास्ता

तुम तक

"तुम तक" एक अनुपम कविताओं का संकलन है, जिसमें प्रेम संबंध के बेहतर लम्हों को शब्दों के सहारे बड़ी ही खूबसूरती से पन्नों पर उतारा गया है। पहली ही किताब में इन बेजोड़ कविताओं द्वारा लेखक ने अपनी प्रतिभा का प्रमाण दिया है।

लेखक के बारे में

वैभव जी मुम्बई यूनिवर्सिटी से इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूरी कर रहे हैं। इनका जन्म १४ अक्टुबर १९९७ को गोंदिया (नागपुर), महाराष्ट्र में हुआ था। मातृभाषा हिन्दी होने के कारण हमेशा से ही हिन्दी साहित्य में इनकी रूची रही। साथ ही संगीत एवं कविताओं के लिये आकर्षण इनका प्रेरणा स्त्रोत रहा।

लेखक से सम्पर्क हेतु:

waibhavsonewane5@gmail.com

FSP MEDIA PUBLICATIONS

BOOK AVAILABLE

Flipkart GET IT ON Google Play

amazon amazonkindle

EBOOK AVAILABLE

ISBN 978-81-19927-60-9

9 788119 927609